प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ१९६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- ७५ भोपाल, २४ सितंबर, डाक २५ सितंबर २०२५ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

सबके लिए खुला है मंदिर ये हमारा। मतभेद को भुलाता मंदिर ये हमारा।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-२८१

कैलाश आदमी

मैं अकसर मैं और हम के मध्य अंतर तलाशने लगता हूं। वस्तुतः दोनों में बहुत फर्क है किंतु बहुत सामंजस्य भी दिखाई पड़ता है। मुझे लगता है कि जब मैं अहं का शिकार हो जाता है तब हम की सुध आती है। कभी-कभी हम और अहं अर्नगल शब्द लग सकते हैं परंतु दोनों का पारस्परिक संबंध अवश्य है। जब कोई व्यक्ति मैं के स्थान पर हम का उपयोग करता है तो उससे यह ध्वनित होता है कि व्यक्ति अहं त्यागकर सबको महत्व दे रहा है। यह भी लगता है कि हममें जब मैं विलिन होता है तो कभी-कभी आंतरिक खुशी भी होती है और लगता है कि हम कब तक मैं को सर माथे पर टांगे घूमते रहें।

मेरे होशंगाबाद में एक मित्र हैं श्रीराम मीणा। वे भोपाल में जिला रोजगार अधिकारी रहे और होशंगाबाद स्थानांतरण होने के बाद साहित्यकार बल्कि कथाकार के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध हुए। उनका कहना था कि मैं का विर्सजन आवश्यक है। विर्सजन से दो व्यक्तियों के संवाद में संवेदना और करूणा का संचार हो जाता है। राष्ट्र भारती पत्रिका में उनकी एक लघुकथा 'विक्रम और बैताल' प्रकाशित हुई जिसे मैं यहां उद्धृत कर रहा हूं-

एक दिन बैताल ने विक्रम से पूछा- बताओ पाठक जब दर्शक हो जाए तब क्या होगा और साहित्य का आईना जब टेलीविजन का पर्दा बन जाए तब क्या होगा?

राजा विक्रम, बैताल का प्रश्न सुनकर जोर से हँस दिया तो बैताल नाराज होकर बोला- तू मेरे महत्व के प्रश्नों को हँसी के ठहाकों में उड़ाना चाहता है। विक्रम बोला-नहीं बैताल ऐसी बात नहीं है। दरअसल टी.वी. सीरियल से जान सके हैं। वरना कौन जानता था हमें। बस कुछ लोगों ने हमारा नाम सुन रखा था। पढ़ा भी बहुत कम लोगों ने था। पहली बार सीरियसली, सीरियल के लिखने वाला मिला भी तो व्यंगकार। कहीं इसी सीरियल को हरिशंकर परसाई से लिखवाया जाता तो हमें उधेड़ कर रख देता। बेचारे शरद जोशी को हम दोनों को धन्यवाद देना चाहिए।

बैताल बोला- और सरकार तथा दूरदर्शन वालों को धन्यवाद नहीं दोगे? विक्रम बोला- उन्हें कैसा धन्यवाद ? दूरदर्शन बैताल है, तो सरकार राजा विक्रम है। बैताल बोला- विक्रम लगता है तू भी.. मार्क्स को पढ़कर ही मेरे प्रश्नों के उत्तर दे रहा है। अरे, मैं तो तुझे जीनियस समझता था पर तू तो करमचंद जासूस निकला। दोनों खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। फिर कुछ गम्भीर होकर प्रश्नोत्तर पर आते हैं।

तो बैताल, पहले तो शरद जोशी का मूड़ बना रहे थे। पहले प्रश्न को यदि संसद और विधान सभाओं में पूछा जाता तो उसका उत्तर कुछ और होता पर यहाँ मैं यह उत्तर दूंगा -जब पाठक/दर्शक हो जाता है तब वह पढ़ता नहीं है बल्कि सिनेमा या टी.वी. देखता है और इससे देश कागज विहीन समाज की ओर बढ़ जाता है। वैसे भी इस वक्त अपने देश में कागज संकट है ही। तुम्हारे दूसरे प्रश्न का उत्तर है- जब साहित्य का आईना-टी.वी. या बीबी का पर्दा बन जाता है, तब साहित्य जर्दा, गर्दा और नामर्दा हो जाता है।

इतना सुनते ही बेताल भी हँसते-हँसते लोट पोट हो गया और विक्रम की आँखों से आंसुओं की धारा बह निकली। अब वे दुःख के आंसू थे या सुख के? ये पाठक बताएंगे।

आज समय बढ़ी तेजी से दौड़ रहा है। लोगों के पास विक्रमादित्य के जमाने में भले ही बड़ी फुर्सत रही हो लेकिन आज कोई किसी की सुनने तैयार नहीं है। सुनने या बात करने में पहले बड़ा मजा आता था। चौपाल पर भी लोग बातें करते थे और वहां सुनने वाले भी मौजूद रहते थे। आज तो पत्र-पत्रिकाओं और बड़े-बड़े अखबारों का हाल यह है कि लोग उनमें केवल समाचारों के शीर्षक पर नजर डालकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। जहां तक साहित्य की बात है साहित्य नदारद रहता है।

आचार्य विनोबा भाव ने वर्ष १९६८ में यह सोचकर आचार्य कुल जैसे विचार-मंदिर की स्थापना की कि यह संस्था जन जाग्रति तथा मतभेदों को भुलाने का काम करेगी तथा ऐसे आचार्य उससे जुड़ेंगे जो निर्वैर, निष्पक्ष और निर्भय हों किंतु खेद की बात है कि विनोबा जी के जीवन काल में तो यह संस्था कुछ दिनों तक चली लेकिन उसके बाद इस संस्था में बिखराव आता गया। आचार्य कुल की स्थापना के समय जो आचार्य जुड़े थे उनमें अब केवल पवनार आश्रम में निवासरत ब्रह्मचारिणी प्रवीणा देसाई और पटना में पूर्व कुलपति डॉ. रामजी सिंह बचे हैं जो किसी तरह संस्था की गाड़ी घसीट रहे हैं।

प्रवीणा बहन ने पुष्पिता अवस्थी को यह सोचकर संस्था का प्रभार दिलाने की पहल की थी कि वे आचार्य कुल को वैश्विक स्वरूप प्रदान करेंगी किंतु खेद की बात है कि वे संस्था को वैश्विक स्वरूप तो क्या उसे राष्ट्रीय स्वरूप भी नहीं दे पाईं। हाल ही कुछ समय पूर्व आचार्य कुल को पुनः संगठित करने के प्रयास किए गए जिससे यह उम्मीद बंधी कि आचार्य कुल के माध्यम से आचार्य समाज में बढ़ रही हिंसक वृत्ति के साथ ही बढ़ते संप्रदायवाद और नफरत व विघटन की राजनीति को लगाम देने का प्रयास करेंगे। खेद की बात है कि एक ओर पूरा विश्व गावं बनने जा रहा है तो दूसरी ओर आचार्य शक्ति सिकुड़ती जा रही है।

नेपाल में जेन-जी कही जाने वाली बाल-किशोर पीढ़ी देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार को लगाम देने हेतु आगे आई किंतु उनकी आड़ में अपराधी व असामाजिक तत्व घुसपैठ करने में सफल रहे जिसके फलस्वरूप श्री केपी ओली को प्रधानमंत्री पद से हटना पड़ा तथा पूर्व न्यायाधीश श्रीमती सुशीला कार्की ने प्रधानमंत्री पद संभाल लिया लेकिन वे इतनी हिम्मत नहीं जुटा सकीं कि जेन-जी के आंदोलन के दौरान हुई हिंसा के लिए जिम्मेदार लोगों को पहचान कर उन्हें जेल के कटघरे में पहुंचाया जा सके। यही नहीं आंदोलन के दौरान जेलों से जो १५ हजार कैदी भागने में सफल रहे उन्हें भी नहीं घेरा जा सका।

स्पष्ट है कि बाल किशोर ही नहीं पूरी युवा पीढ़ी को सही व समुचित नेतृत्व व मागर्दशन नहीं मिल रहा है। केवल नेपाल की बात होती तो भी सब्र किया जा सकता था लेकिन अन्य कई देशों में जेन-जी जैसे आंदोलन हुए किंतु वहां भी इसके अच्छे परिणाम सामने नहीं आ सके बल्कि हिंदुस्तान के जेन-जी पीढ़ी के बाल किशोर भी भ्रम के शिकार हो रहे हैं और भ्रम का दायरा युवाओं और प्रौढ़जनों तक बढ़ रहा है। यदि समय रहते उन्हें सही दिशा नहीं मिली तो हमारे देश में भी अपराधी और हिंसा की ताकतें गुल खिला सकती हैं। अतएव सत्ता और विपक्ष दोनों को सतर्क रहना होगा। अंत में आचार्यकुल और सर्वोदय से जुड़े लोकसेवकों द्वारा गाये जाने वाले गीत की ये दो काव्य पंक्तियां-

सबके लिए खुला है मंदिर ये हमारा।
मतभेद को भुलाता मंदिर ये हमारा।।

कब हम अपने देश में योग्य हैं?

व्यंग्य/
शशिकांत गुप्ते

स्वदेशी अपनाओं यह वाक्य जब भी पढ़ने सुनने को मिलता है। तब मुझे अपने स्वयं के भारतीय होने पर संदेह होने लगता है। संदेह होने का कारण मुझे संत तुलसीदास द्वारा रचित निम्न चौपाई का स्मरण होता है- पर उपदेश करत बहुतेरे, जे आचरही न ते नर न घनेरे।

साथ ही युग निर्माण योजना द्वारा प्रचारित और प्रसारित निम्न दो स्लोगन याद आते हैं-

1) हम सुधरेंगे तो युग सुधरेगा 2) कथनी करनी भिन्न जहां, धर्म नहीं पाखंड वहां

एक ओर हम अपनी भारत भूमि को मां कहकर संबोधित करते हैं,लेकिन नाटे कद के निवासियों के देश ने अपनी भारत की भूमि पर ना सिर्फ घुसपैठ की है बल्कि अपनी जमीन को हड़प कर उस पर कब्जा भी कर लिया है? इसी नाटे कद के देश को लाल आंख दिखाने की घोषणा की अमल बजावणी का इंतजार,बाट जोहता ही रह गया और अपनी आयात नीति ने अपने उदार हृदय के पट खोल दिए।चीन से अरबों रुपयों के उत्पादों का आयात का सौदा व्यावहारिकता में तब्दील हो गया?

इसीलिए मुझे स्वयं के स्वदेशी होने का संदेह होता है, कारण मैं अपनी उदार आयात नीति के विरुद्ध कुछ उच्छृंखल स्वदेशी प्रेमियों को कुछ छोटे दुकानों पर बिकने वाले चीनी उत्पादों को क्रय करने वालें दुकानदारों को प्रताड़ित होते देखता हूं?

मुझे गांधीजी का स्मरण होता है,कारण गांधीजी ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई थी। अब तो विदेश वस्तुओं के प्रति भारतीयों को असीम प्रेम हृदय पर अमिट छाप झोड़ रहा है। यह तो हुई नीति गत बात लेकिन नीति की जब बुरी गत होते देखता हूं तब मेरी मानसिक अस्थिरता बढ़ जाती है,कारण मैं मोबाइल उठाता हूं तो स्मरण होता है कि मोबाईल के कलपुर्जे तो चीनी है, टी वी देखता हूं तो चीन को कैसे भूल सकता हूं।

रक्तचाप,और नब्ज के स्पंदन को नापने के यंत्र में घुसे चीनी कलपुर्जे मेरी हृदय की धड़कन को विचलित कर देते हैं? अपने देश के पालक अपने बच्चों की प्रथमिक या माध्यमिक शिक्षा के बाद अपने बच्चों को विदेश शिक्षा प्राप्त करवाने के लिए इतने लालायित रहते है कि वे गिरते रुपए की परवाह न करते हुए अपने नौनिहाल के माथे पर विद्यार्थी जीवन में कर्ज का बोझ डाल कर विदेश धरती पर पढ़ने के लिए भेजने में गर्व का अनुभव करते हैं। तब मेरा अपना स्वदेशी होने का संदेह और पुख्ता होने लगता है। जब मुझे युग पुरुष ,बगैर जीव विज्ञान जन्मे महा नायक द्वारा विदेशी धरती पर यह संबोधन दिया जाता है कि पता नहीं पिछले जन्म में कितनी पाप किए जो भारत में जन्म हुआ। यह सुवाक्य याद आते ही मुझे अपने भारतीय होने के संदेह की पुष्टि होने लगती है। जैसे ही मैं दिवास्वप्न को त्याग कर जाग जाता हूं तब मुझे गांधीजी गौतम,और बुद्ध जी का स्मरण होता है,और मैं गीतकार साहिर लुधियानवी द्वारा रचित निम्न गीत गुनगुनाने लगता हूं-

अब कोई गुलशन न उजड़े अब वतन आज़ाद है
रूह गंगा की हिमाला का बदन आज़ाद है
खेतियां सोना उगाएं वादियां मोती लिटाएं
आज गौतम की ज़मीं तुलसी का बन आज़ाद है
मंदिरों में संख बाजे मस्जिदों में हो अज़ान
शैख़ का धर्म और दीन-ए-बरहमन आज़ाद है
लूट कैसी भी हो अब इस देश में रहने न पाए÷
आज सब के वास्ते धरती का धन आज़ाद है
(फिल्म मुझे जीने दो 1963)

आजकल चुनाव आयोग की योग्यता/अयोग्यता की बड़ी चर्चा है। अ- योग्य नहीं हो आयोग?

चुनाव आयोग इतने आरोपों के बाद चूं तक नहीं कर रहा है। और व्यवस्था के कानों में जू तक नहीं रेंग रही है। हां यह सत्य है कि दे जीवीश के इतिहास में पहली बार कोई राजनैतिक दल किसी स्वायत्त कहलाने वाले आयोग का प्रवक्ता बन रहा है। यह आयोग और राजनैतिक दल में समन्वय नहीं कहा जाएगा? नाही समझौता कहा जाएगा? नाही आपसी तालमेल कहा जाएगा? यह शुद्ध घालमेल मतलब मिलावट, गड्डमड्ड,या अनुचित संबंध भी कहा जा सकता है?

इसी घाल मेल द्वारा किसी दल को चुनाव की नाव में सवार करवाकर योग संयोग से अ योग द्वारा नाव की पतवार थाम कर दल को सुरक्षित रूप से गंतव्य तक पहुंचाने की जिम्मेदारी का निर्वाह करना कहा जा सकता के है। यह योग मतलब शारीरिक कसरत नहीं ना यह दो संख्याओं का योग मतलब जोड़ है, यह शुद्ध Manipulation है।

इस Manipulation के कारण चुनाव की वैधानिक प्रक्रिया हाशिए पर रख दी जाती है,और छद्म Calculation करते हुए दल विशेष की संख्या जादुई करिश्में की तरह बढ़ा दी जाती है। कारण यह Calculation होता ही नहीं है। Manipulation होता है।

Manipulation एक ऐसी क्रिया है जो मतदाताओं की संख्या को घटाना या बढ़ा भी कर सकती है। इतना ही नहीं मृत को जीवित,जीवित को मृत भी कर सकती है।

चुनाव की नाव की पतवार संभाल लेने के लिए मल्हाह के पद पर आसीन करने के एहसान को अ योग्य, यदि दल के प्रति एहसानमंद नहीं होगा तो वह दल की नज़र में एहसानफरामोश कहलाएगा।

मतदाता सूची में नाम गायब होना,एक व्यक्ति के अनेक जगह जुड़ जाना,मृत व्यक्ति जीवित और जीवित व्यक्ति का मृत होना इन दिनों स्वाभाविक प्रक्रिया हो गई है।

आयोग की इसी गलती या Manipulation का नतीजा निम्न तरह कि आश्चर्य जनक घटना।घटित हो सकती ।है। यह प्रत्यक्ष घटना मेरे ही साथ घटी है।

कल एक परिचित व्यक्ति मुझ से मिलने आए और मुझ से कहा मिलने से पहले मुझे Pinch करो मतलब चुटकी काटो।मैं ने पूछा क्यों? तो व्यक्ति ने कहा मुझे मतदाता सूची में मृत घोषित किया है,लोग मुझे मनुष्य नहीं भूत समझ रहे हैं। घर वाले तांत्रिक और ओझाओं के पास ले जाते है झाड़ फूंक करवाने के लिए।

मुझे उस परिचित व्यक्ति पर दया आ रही थी। यह तो एक उदाहरण मात्र है।

अब मतदाता सूची में नाम जुड़वाने और हटाने के लिए भी तांत्रिक और ओझा लोग विज्ञापन कर सकते हैं। एक नारियल दो नींबू,125ग्राम काली खड़ी उड़द,125ग्राम बारीक राई,एक नागफणी किल लोहे की सवा मीटर काला कपड़ा और पंच रंग धागा। साथ में दक्षिणा अर्थात मुंह मांगा मानधन।संयोग से नवरात्रि चल रही है।

-इंदौर

आज की कविता : संभावना

नीता श्रीवास्तव

सिर पर पहने
दहशत का ताज,
बेबस माँ की गोद में
सिसकता है
एक मासूम लाल।
हर तरफ़ गोलाबारी ,युद्ध की आग !
वीरान कर रही है ज़मीनें,
धधक रही है, पेट की आग !
ईमारतों के साथ टूटते जा रहे
जीवन के सपने
माँ की आँखों में
धुँधलाता भविष्य..
क्या बचेगा कुछ
उसके लाल के लिए?
लेकिन वहीं, इस धरा की गोद में
अब भी है एक अंकुर—
जो हर पतझड़ के बाद
फिर से हरियाली रचता है।
प्रकृति, हर बार सिखाती है-
नवजीवन का पाठ,
चुपचाप बो देती है
नयी ऊर्जा का बीज !
युद्ध के बीच - आकाश में
दिखती है एक चिड़िया !
जैसे कह रही हो,
अभी सब खत्म नहीं हुआ है ।

- कनाड़ा

नवरात्रि में माता रानी की ऐसे करें पूजा

निर्दलीय विशेष/
पं. पूजा दुबे

वैदिक पंचांग के अनुसार, शारदीय नवरात्रि अश्विन मास की प्रतिपदा तिथि से प्रारंभ होकर नवमी तिथि को समाप्त होती है. इस साल शारदीय नवरात्रि की शुरुआत गत 22 सितंबर से हुई है और दस दिन यह महोत्सव मनाया जाएगा। 22 सितंबर को ही कलश स्थापना की गई. अब 30 सितंबर को महा अष्टमी, 1 अक्टूबर को महानवमी और 2 अक्टूबर को दशहरा पर्व मनाया जाएगा. 2 अक्टूबर को ही मां दुर्गा की प्रतिमाओं का विसर्जन होता है.नवरात्रि का आरंभ घटस्थापना के साथ शुरू होता है.

शारदीय नवरात्रि में माता के आगमन और प्रस्थान की सवारी बहुत खास होती है. माता की सवारी भविष्य में होने वाली शुभ व अशुभ घटनाओं का संकेत देती है. नवरात्रि के आरंभ और समापन के दिन माता की सवारी प्रकट होती है. इस बार शारदीय नवरात्रि सोमवार से प्रारंभ हुई है। इसलिए मां दुर्गा की सवारी हाथी है। माता का हाथी पर आगमन अत्यंत शुभ और मंगलकारी माना जाता है. इसे समृद्धि, उन्नति और शांति का प्रतीक माना गया है.।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।

उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ।। माँ दुर्गा का पहला ईश्वरीय स्वरुप शैलपुत्री है। शैल का अर्थ है शिखर। शास्त्रों में शैलपुत्री को पर्वत (शिखर) की बेटी के नाम से जाना जाता है। आमतौर पर यह समझा जाता है कि देवी शैलपुत्री कैलाश पर्वत की पुत्री हैं। ' ऐं ह्रीं क्लीं शैलपुत्र्यै नमः' मन्त्र के जप से आप माँ दुर्गा के पहले स्वरुप माँ शैलपुत्री की आराधना कर सकते हैं। माँ दुर्गा के दूसरे रूप का नाम है माँ ब्रह्मचारिणी।

यहाँ ब्रह्म का अर्थ है- जिसका कोई आदि या अंत न हो, वह जो सर्वव्याप्त, सर्वश्रेष्ठ है और जिसके परे कुछ भी नहीं। जब आप आँखे बंद कर के ध्यानमग्न होते हैं तब अनुभव करते हैं कि ऊर्जा अपनी चरम सीमा या शिखर पर पहुँच जाती है। ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मचारिण्यै नमः मन्त्र के जप से आप माँ दुर्गा के दूसरे स्वरुप माँ ब्रह्मचारिणी का आवाहन कर सकते हैं ।देवी माँ के तृतीय ईश्वरीय स्वरुप का नाम माँ चन्द्रघण्टा है।चन्द्रमा हमारे मन का प्रतीक है। मन का अपना ही उतार चढ़ाव लगा रहता है। प्रायः हम अपने मन से ही उलझते रहते हैं -सभी नकारात्मक विचार हमारे मन में आते हैं, ईर्ष्या आती है, घृणा आती है और आप उनसे छुटकारा पाने और अपने मन को स्वच्छ करने के लिए संघर्ष करते हैं। ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रघंटायै नमः मन्त्र के जप से आप माँ दुर्गा के तीसरे स्वरुप माँ चंद्रघंटा का आवाहन कर सकते हैं ।देवी माँ के चतुर्थ रूप का नाम है, देवी कूष्माण्डा।

कूष्माण्डा का संस्कृत में अर्थ होता है कद्दू।लौकी, कद्दू गोलाकार है। अतः यहाँ इसका अर्थ प्राणशक्ति से है - वह प्राणशक्ति जो पूर्ण, एक गोलाकार, वृत्त की भांति है।

भारतीय परंपरा के अनुसार लौकी, कद्दू का सेवन मात्र ब्राह्मण, महा ज्ञानी ही करते थे ऐं ह्रीं क्लीं कूष्मांडायै नमः के जप से आप माँ दुर्गा के चौथे स्वरुप माँ कूष्मांडा की आराधना कर सकते हैं।देवी माँ का पाँचवां रूप स्कंदमाता के नाम से प्रचलित है। भगवान कार्तिकेय का एक नाम स्कन्द भी है जो ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के एक साथ सूचक हैं। स्कन्द इन्हीं दोनों के मिश्रण का परिणाम है। स्कन्दमाता वह दैवीय शक्ति हैं, जो व्यवहारिक ज्ञान को सामने लाती हैं ङ्क वह जो ज्ञान को कर्म में बदलती हैं। ऐं ह्रीं क्लीं स्कंदमतायै नमः' के जप से आप माँ दुर्गा के पाँचवें स्वरुप माँ स्कंदमाता का आवाहन कर सकते हैं ।देवी माँ का छठा रूप का नाम है, देवी कात्यायनी है।

हमारे सामने जो कुछ भी घटित होता है, जिसे हम प्रपंच का नाम देते हैं, जरूरी नहीं कि वह सब हमें दिखाई दे। वह जो अदृश्य है, जिसे हमारी इन्द्रियाँ अनुभव नहीं कर सकती वह हमारी कल्पना से बहुत परे और विशाल है। सूक्ष्म जगत जो अदृश्य, अव्यक्त है, उसकी सत्ता माँ कात्यायनी चलाती हैं ऐं ह्रीं क्लीं कात्यायनायै नमः के जप से आप माँ दुर्गा के छठें स्वरुप माँ कात्यायनी का आवाहन कर सकते हैं ।देवी माँ के सप्तम रूप का नाम है माँ कालरात्रि।

यह माँ का अति भयावह व उग्र रूप है। सम्पूर्ण सृष्टि में इस रूप से अधिक भयावह और कोई दूसरा नहीं। किन्तु तब भी यह रूप मातृत्व को समर्पित है। देवी माँ का यह रूप ज्ञान और वैराग्य प्रदान करता है। ऐं ह्रीं क्लीं कालरात्र्यै नमः जप से आप माँ दुर्गा के सातवें स्वरुप माँ कालरात्रि की पूजा कर सकते हैं।देवी माँ का आठवाँ स्वरुप है महागौरी।महागौरी का अर्थ है- वह रूप जो कि सौन्दर्य से भरपूर है, प्रकाशमान है - पूर्ण रूप से सौंदर्य में डूबा हुआ है। प्रकृति के दो छोर हैं- एक माँ कालरात्रि जो अति भयावह, प्रलय के समान हैं और दूसरा माँ महागौरी जो अति सौन्दर्यवान, देदीप्यमान, शांत हैं ।' ऐं ह्रीं क्लीं महागौर्यै नमः के जप से आप माँ दुर्गा के आठवें स्वरुप माँ महागौरी की पूजा कर सकते हैं । देवी के नौंवे रूप को सिद्धिदात्री कहा जाता है।

देवी महागौरी आपको भौतिक जगत में प्रगति के लिए आशीर्वाद और मनोकामना पूर्ण करती हैं, ताकि आप संतुष्ट होकर अपने जीवनपथ पर आगे बढ़ें। ऐं ह्रीं क्लीं सिद्धिदात्र्यै नमः के जप से आप माँ दुर्गा के नौवें स्वरुप माँ सिद्धिदात्री की पूजा कर सकते हैं । पहले दिन माता शैलपुत्री की पूजा करते वक्त पीले रंग के वस्त्र धारण करना अच्छा रहा। वहीं आज द्वितीया को सफेद रंग का वस्त्र धारण कर माता ब्रह्मचारिणी की पूजा की गई।24 सितंबर को तृतीया को भूरे या लाल रंग का वस्त्र धारण करना अच्छा रहेगा। चतुर्थी को नारंगी या पीला रंग धारण करने से माता कुष्मांडा की कृपा मिलेगी। पंचमी को सफेद रंग का वस्त्र धारण कर स्कंदमाता की पूजा करें। षष्ठी को कात्यायनी की पूजा होती है और उन्हें लाल रंग पसंद है। सप्तमी को नीले रंग के वस्त्र धारण कर कालरात्रि की पूजा करें। अष्टमी को गुलाबी रंग के वस्त्र धारण कर महागौरी की पूजा करें। महानवमी के दिन बैंगनी रंग के वस्त्र धारण करने चाहिए। अपनी राशि के अनुसार देवी की किस महाविद्या की पूजा अर्चना करनी चाहिए जो आपको शुभ फल प्रदान करें, दैनिक निर्दलीय के पाठकों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण होगा। मेष राशि वालों को नव दुर्गा में देव शैल पुत्री वृषभ राशि वालो को नवदुर्गा में देवी ब्रह्मचारिणी की पूजा करनी चाहिए. मिथुन राशि वालों को नवदुर्गा में देवी चन्द्रघंटा की आराधना करना श्रेष्ठ है. कर्क राशि वालों को भी देवी चन्द्रघंटा की आराधना करना श्रेष्ठ होता है। सिंह राशि वालों को नव दुर्गा में देवी कालरात्रि का पूजन करना चाहिए। - ज्योतिषाचार्य, टैरो कार्ड रीडर, न्यूमैरोलॉजिस्ट, रेकी ग्रैंडमास्टर, कवयित्री, संस्थापक द एस्ट्रो विजडम 108 तथा नमो हरि सोशल क्लब, भोपाल